KR/KLG/3B/4.00

SHRI SITARAM YECHURY (CONTD.): You have the Rama Sena, another squad, that is, moral policing in the country, and saying how women should behave. In U.P. now you say, we want to protect the women, and, therefore, the anti-Romeo squads. Now, the latest is a very, very film director and producer, Mr. Sanjay Leel Bhansali. He was attacked for so-called distortion of history. Now, who has got the authority over history, we do not know. You had earlier attacks on Aamir Khan and Shah Rukh Khan. You had the intolerance and we saw the killing of Dabholkar, Pansare and Kalburgi. You had this intolerance saying that art can't hurt the religious sentiments of the people. What is the right to information in our Constitution? What is that logic? What is that right there? The right is there only for those people as a work of fiction. Work of fiction can rewrite history, can rewrite mythology. Much of the mythology today that is passed off in history is actually a fiction. Today you say that you can't do that and that intolerance is growing. Actually that is a diabolic project that is actually unfolding today.

Last point, Sir. On diversion, I am suddenly reminded of Mr. Manmohan Desai, a very famous film producer, whose every other film used to be a

silver jubilee hit and a golden jubilee hit. So, he was once asked in final days of his life, and that is why he confessed. He was once asked in one of the old famous magazines, *the Illustrated Weekly* of India, which doesn't exist anymore. In his last interview, he was asked, what was the success of your films? Why is it that every film of yours is a jubilee hit? Then, he said, "The success lies in one fact." The interviewer asked, "What is that?" He said, "Whenever people come to see my films in theatres, from the beginning till the end of the film, the people should not think. If the people think, then, the film is a failure." People should be taken off into a non thinking mode; and that is this Government's practice. One jumla after another, one after another, one after another. Before anybody can forget you have another new one. The point is not let the people think, and, therefore, continue with your diabolic agenda. What is that agenda? Again construction of Ram temple is back on the agenda in U.P., and that agenda is actually the effort to transform the secular, democratic Indian Republic as enshrined in our Constitution into what they call their version of theocratic * Hindu Rashtra which is what the R.S.S. fascistic project is. That diabolic agenda is something that India, as we know of it, can't afford. That is something till the last drop of blood in me and in all of us we will continue to

---

***Expunged as ordered by the Chair.**

defend; and we will continue to defend. Therefore, this * which is the essence of the President's Address should not be allowed to lead to the unfolding of * and this is what I beseech this entire august House that before we return the Motion of Thanks that adequate changes be made so that this sentiment is conveyed to the hon. President and that is my final beseeching to the House. Thank you, Sir.

(Ends)

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Thank you. Next, Mr. C.M. Ramesh, not present. Mr. Ram Kumar Kashyap, not present. Shri Dharmapuri Srinivas, not present. Shri Mukhtar Abbas Naqvi. (Followed by 3C/KS)

AKG-KS/3C/4.05

संसदीय कार्य मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री मुख्तार अब्बास नक़वी) : उपसभापति जी, मैं राष्ट्रपति जी के अभिभाषण के धन्यवाद प्रस्ताव पर बहुत ज्यादा नहीं बोलूँगा, क्योंकि हमारी पार्टी के लोगों ने इस सम्बन्ध में काफी विस्तार से कहा है। केवल 3-4 विषय ऐसे हैं, जिन्हें मैं इस सदन के सामने रखना चाहता हूँ। मैं इस बात से शुरुआत करूँगा कि हम लोग आंदोलन में, क्रांति के समय एक बहुत ही मशहूर गीत गाया करते थे और वह गीत था -

---

***Expunged as ordered by the Chair.**

"हो गई है पीड़ पर्वत-सी पिघलनी चाहिए,
इस हिमालय से कोई गंगा निकलनी चाहिए।
सिर्फ हंगामा खड़ा करना मेरा मकसद नहीं,
सारी कोशिश है ये कि सूरत बदलनी चाहिए।"

प्रधान मंत्री, नरेन्द्र मोदी जी की सारी की सारी कोशिश यह है कि ढाई-पौने तीन साल पहले जो विरासत मिली, उस विरासत पर बिना सियासत किए हुए हम देश में विकास और विश्वास का माहौल कैसे खड़ा करें, कैसे पैदा करें। पूरा देश जानता है कि जब नरेन्द्र मोदी जी इस देश के प्रधान मंत्री बने और उनको बागडोर मिली, तो उनके सामने सबसे बड़ी चुनौती यह थी कि करप्शन का पूरा माहौल था, एक लंबी श्रृंखला थी। उसे बार-बार दोहराने की जरूरत नहीं है, पूरे घोटालों का घंटाघर खड़ा था। चारों तरफ घोटाले, चारों तरफ भ्रष्टाचार, चौतरफा, हर तरफ उसकी छाया दिखाई पड़ती थी। यह एक बहुत बड़ी चुनौती थी। इतनी चुनौती भरी विरासत लेकर कोई सत्ता में आए, तो हम समझ सकते हैं कि निश्चित तौर पर उनके सामने एक बहुत बड़ी चुनौती थी। प्रधान मंत्री, नरेन्द्र मोदी जी ने सबसे पहला काम यह किया कि दिल्ली की सत्ता के गलियारे से सत्ता के दलालों की नाकेबंदी और लूट लॉबी में तालेबंदी की। उपसभापति महोदय, इसका नतीजा यह हुआ कि ढाई-पौने तीन सालों के बाद आज जब हम राष्ट्रपति जी के अभिभाषण के धन्यवाद प्रस्ताव पर यहाँ चर्चा कर रहे हैं, तो हम बहुत गर्व के साथ इस देश को बता रहे हैं कि हमने भ्रष्टाचार मुक्त और विकास युक्त व्यवस्था दी है। हमने उन बेईमानों, जिन्होंने इस देश के विकास और इस देश के गरीबों

के विकास में घुन की तरह नुकसान पहुँचाया, उनका खात्मा किया है। यह बात सही है कि यह जो चुनौती थी, यह चुनौती केवल भ्रष्टाचार मिटाने के लिए नहीं थी। जो गरीब है, जो कमजोर तबका है, जो पिछड़ा तबका है, जो अल्पसंख्यक हैं, जो दलित हैं, चाहे कोई भी सरकार रही हो, उनके विकास में पैसे की कमी कभी नहीं रही है। राज्य सरकारों के पास भी पैसे की कमी कभी नहीं रही है। केन्द्र और राज्य सरकारों द्वारा इतना पैसा खर्च किए जाने के बावजूद जो देश का पिछड़ा तबका है, जो देश का कमजोर तबका है, जो देश का गरीब है, उस तक विकास की रोशनी क्यों नहीं पहुँच पा रही थी। यह बेईमानी का कौन सा बाँध था, जिस बाँध ने विकास की जो अविरल धारा थी, उस अविरल धारा को रोक रखा था? हमने उस बेईमानी के बाँध को ध्वस्त किया और विकास की अविरल धारा उस गरीब, उस आखिरी पायदान पर खड़े हुए व्यक्ति तक पहुँचे, जिसे विकास की जरूरत है, हमने उसके लिए काम किया। प्रधान मंत्री, नरेन्द्र मोदी जी का एक ही संकल्प था - विकास और विश्वास। जब हम विकास और विश्वास की बात करते हैं, तो उसमें हम जाति की बात नहीं करते, धर्म की बात नहीं करते, क्षेत्र की बात नहीं करते, बल्कि हम उस व्यक्ति की बात करते हैं, जिस तक विकास की रोशनी नहीं पहुँच पाई है। उपसभापति महोदय, हम गरीब की आँखों में खुशी और उसकी जिन्दगी में खुशहाली लाने के संकल्प के साथ काम कर रहे हैं। हमने उस संकल्प को काफी हद तक पूरा किया है और आगे आने वाले दिनों में हम उसे और पूरा करेंगे। उपसभापति महोदय, जब हम अपने 5 साल का हिसाब-किताब और लेखा-जोखा देंगे, तो हम आपको एक ऐसे भारत की तस्वीर दिखाएँगे, पूरी दुनिया को

दिखाएँगे, जो तस्वीर एक खुशहाल भारत की होगी, भ्रष्टाचार और घोटालों से मुक्त भारत की होगी और बेईमानों और बेईमानी के बाँध को ध्वस्त करते हुए भारत की होगी।

उपसभापति महोदय, महात्मा गाँधी जी ने एक नारा दिया था, आह्वान किया था। उस समय के बारे में हम लोग किताब में पढ़ते हैं, जिस वक्त अंग्रेजों और विदेशी कपड़ों का बहिष्कार किया गया था। जब महात्मा गाँधी जी ने विदेशी कपड़ों के बहिष्कार का आह्वान किया था, तो देश के हजारों-लाखों लोगों ने विदेशी कपड़ों की होली जला दी थी। इससे देश में स्वदेशी का जो संकल्प था, स्वदेशी की जो भावना थी, उसको ताकत मिली थी, बल मिला था। उसके बाद भी हमारे तमाम राष्ट्र नायक हुए हैं, जिन्होंने समय-समय पर जनता का आह्वान किया और लोगों ने उसको नतमस्तक होकर स्वीकार भी किया और उसको लेकर आगे भी बढ़े।

(3डी/एससीएच पर जारी)

SCH-RSS/4.10/3D

श्री मुख्तार अब्बास नक़वी (क्रमागत) : उपसभापति महोदय, जब श्री नरेन्द्र मोदी जी को प्रधान मंत्री के रूप में सत्ता मिली, तो उन्होंने एक आह्वान किया। उस समय हम लोगों को भी लगता था कि प्रधान मंत्री जी ने यह जो आह्वान किया है, मालूम नहीं लोग उसको स्वीकार करेंगे या नहीं करेंगे, क्योंकि उस समय राजनीतिक व्यवस्था के प्रति बहुत अधिक विश्वास का माहौल नहीं था। प्रधान मंत्री जी ने आह्वान किया कि जो सम्पन्न लोग हैं, जिनके पास पैसे हैं, उन्हें गैस सब्सिडी छोड़ देनी चाहिए। इसके लिए किसी भी इंस्पेक्टर, दारोगा, पुलिस वाले अथवा प्रशासनिक अधिकारी को नहीं भेजा

गया, केवल एक आह्वान किया गया। मुझे सदन में इस बात को बताते हुए खुशी है कि जब प्रधान मंत्री जी ने यह आह्वान किया, तो करोड़ों लोगों ने गैस की सब्सिडी छोड़ दी। गैस सब्सिडी छोड़ने का नतीजा यह हुआ कि जो गरीब लोग थे, कमजोर तबके के लोग थे, जो सोच भी नहीं सकते थे कि उनके घर भी कभी गैस का चूल्हा आ पाएगा, ऐसे करोड़ों लोगों को free of cost गैस का चूल्हा उपलब्ध करवाया गया। वे माताएं, वे बहनें, जो कभी यह सोचती भी नहीं थीं कि हम भी कभी अपने घरों में गैस का चूल्हा जला पाएंगी, उनको निःशुल्क ...(व्यवधान)...

श्री सीताराम येचुरी : एक मिनट, मैं कुछ कहना चाहूंगा। जब मैं बोल रहा था, तब मैंने भी आपके लिए यील्ड किया था। मैं बस एक बात कहना चाहता हूं कि आप यह जो गैस की सब्सिडी के बारे में बता रहे हैं, सीएजी की एक रिपोर्ट आई थी, जो हमारे यहां टेबल भी की गई थी, वह रिपोर्ट यह बताती है कि आप जो भी आंकड़े बता रहे हैं, ये सब गलत हैं। आप इस बात को नोट कर लीजिए। मैं सिर्फ आपको वह बात याद दिलाने के लिए खड़ा हुआ था।...(व्यवधान)...

श्री मुख्तार अब्बास नक़वी : ठीक है, जब आप सीएजी की रिपोर्ट पर चर्चा कीजिएगा, तब आप यह बात बताइएगा।

उपसभापति महोदय, करोड़ों लोगों तक गैस का चूल्हा निःशुल्क दिया गया। मैं इस बात को इसलिए कह रहा हूं क्योंकि यह बात बार-बार आ चुकी है। सीताराम जी कहेंगे कि सीएजी ने उसको कंट्राडिक्ट किया है, हम कहेंगे कि नहीं, हमने कंट्राडिक्ट नहीं किया है। हम जमीन की हकीकत की बात कर रहे हैं, हम कागज़ या कंप्यूटर की

हक़ीकत की बात नहीं कर रहे हैं। जमीन की हकीक़त यह है कि आज करोड़ों लोग हमें दुआएं दे रहे हैं। जो लोग सोच भी नहीं सकते थे कि उनके घर में कभी गैस का चूल्हा आ सकता है, ऐसे लोगों को गैस का चूल्हा मिला है। मैं इसको विकास और विश्वास के साथ इसलिए जोड़ रहा हूं, क्योंकि राजनैतिक व्यवस्था को लेकर लोगों में कहीं न कहीं सवालिया निशान खड़े हो गए थे। अगर कोई राजनेता, प्रधान मंत्री या मुख्य मंत्री इस तरह का आह्वान करे, तो बहुत कम ही ऐसा देखा गया है कि इतनी बड़ी तादाद में लोग उस आह्वान के पक्ष में खड़े हो जाएं। एक प्रधान मंत्री कहे कि हमें 'स्वच्छ भारत' का अभियान चलाना है और देश की सफाई के लिए काम करना है और लोग उसकी बात पर अमल करें। लोग यह सोचते हैं कि यह प्रधान मंत्री का काम थोड़े ही है कि वह स्वयं हाथ में झाड़ू लेकर स्वच्छ भारत के लिए काम करे। यह बहुत छोटी चीज़ थी, लेकिन समाज में इसका बहुत बड़ा मैसेज गया था। यह मैं इसलिए कह रहा हूं कि समाज में जो बदलाव का संकल्प है, उस संकल्प को पूरा करने का काम हुआ है और पूरे देश के सामने एक पॉज़िटिव मैसेज गया है।

उपसभापति महोदय, आज जिस विकास की बात हो रही है, वह धर्म, जाति, क्षेत्र या संप्रदाय इत्यादि की तमाम सीमाओं से ऊपर उठकर बात हो रही है। प्रधान मंत्री जी जब भी कोई बात कहते हैं, तो 125 करोड़ हिन्दुस्तानियों को संबोधित करते हुए कहते हैं। उन्होंने कभी भी यह नहीं कहा कि यह अमुक क्षेत्र के लोगों, अमुक धर्म के लोगों अथवा अमुक जाति या संप्रदाय के लोगों के लिए है, वे हमेशा 125 करोड़ लोगों का नाम लेते हुए अपनी बात कहते हैं। आज अगर विकास की सबसे ज्यादा किसी को जरूरत

है, तो निश्चित रूप से गरीब को है। अभी सीताराम जी एससी/एसटी और माइनॉरिटीज़ की बात कह रहे थे। तमाम रिपोर्ट्स बताती हैं कि गरीबी की रेखा के नीचे रहने वाले लोगों की संख्या हमारे समाज में सबसे ज्यादा है। यह कहने की जरूरत नहीं है कि हम गरीबों के विकास, गरीबों के सशक्तिकरण और empowerment की बात कर रहे हैं।

उपसभापति महोदय, गरीबों के सशक्तिकरण के लिए हम ईमानदार राजनैतिक इच्छा शक्ति के साथ काम कर रहे हैं। यह हमारा राजधर्म ही नहीं है, बल्कि राष्ट्रीय कर्तव्य भी है और हम अपने उस कर्तव्य को पूरा कर रहे हैं। यह वोट का सौदा नहीं है, यह विकास का मसौदा है।

उपसभापति महोदय, मैं नहीं मानता कि यह हमारी सरकार की कोई बहुत बड़ी उपलब्धि है, लेकिन चूंकि अल्पसंख्यकों का जिक्र आया है, तो मैं आपको इसके आंकड़े देना चाहूंगा। सरकारी नौकरियों में, विशेष तौर पर केन्द्र सरकार की नौकरियों में अल्पसंख्यकों का जो प्रतिशत था, वह 2014 में 5.3% था। सर, आज जब हम 2016 और 2017 के शुरुआती दिनों की बात कर रहे हैं, तो मैं आपको बताना चाहूंगा कि आज केन्द्र सरकार की नौकरियों में अल्पसंख्यकों की भागीदारी 9.9% हुई है।

(3e/rpm पर जारी)

RPM-KGG/4.15/3E

श्री मुख्तार अब्बास नक़वी (क्रमागत): महोदय, यह हमारी वजह से नहीं हुई है, हम नहीं मानते कि उनमें काबिलियत नहीं थी, उनकी काबिलियत भी थी। उनका यह अधिकार उन्हें पहले मिलना चाहिए था। भेदभाव हुआ होगा, लेकिन हमने वह माहौल

पैदा किया जिससे कि भेदभाव का माहौल खत्म हो और ईमानदारी के साथ उनकी काबिलियत का सम्मान किया जाए। इसका नतीज़ा यह हुआ कि इन पौने तीन सालों के अंदर केन्द्र सरकार में जो नौकरियों का प्रतिशत है, वह बढ़ता हुआ दिख रहा है। यह उनके अंदर विकास और विश्वास के माहौल की वजह से बढ़ रहा है। हम अपना राष्ट्रीय कर्तव्य और राज-धर्म मानते हैं कि यह माहौल बने रहना चाहिए और समाज के सभी वर्गों की काबिलियत का सम्मान होना चाहिए।

माननीय उपसभापति महोदय, आतंकवाद की बात आई, असहिष्णुता की बात आई, इनटॉलरेंस की बात आई, अवॉर्ड वापसी भी होती रही और मोहनजोदड़ो और हड़प्पा की खुदाई से अवॉर्ड निकाल-निकाल कर दिखाए जाते रहे कि यह अवॉर्ड हमें अंग्रेजों ने दिया है और मोदी जी हम इसे वापस करने जा रहे हैं। इन सारी चीजों के बावजूद भी माईनॉरिटी कमीशन अपनी जो रिपोर्ट देता है, वह बताता है कि इस बीच साम्प्रदायिक घटनाएं 200 प्रतिशत से ज्यादा कम हो गई हैं। इस बीच देश में कोई बड़ी साम्प्रदायिक उन्माद और और साम्प्रदायिक दंगों की घटना नहीं हुई। हम कहते हैं कि जीरो टॉलरेंस होना चाहिए, यानी एक छोटी सी घटना भी नहीं होनी चाहिए। हम उसके खिलाफ हैं, लेकिन अगर देश में विकास और विश्वास का माहौल बना है, तो यह हर देशवासी के लिए गर्व का विषय है। यह केवल हमारी सरकार या मोदी जी के लिए ही गर्व का विषय नहीं है। यह समाज के सभी वर्गों के लिए है। हम तो हमेशा कहते हैं कि "तू हाकिम बना है, तो इंसाफ भी कर, तू हिन्दू मुसलमान क्या देखता है"। जो हाकिम है, उसके लिए हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख और ईसाई कोई चीज नहीं है और उसे केवल

इंसाफ करना चाहिए और उस इंसाफ के रास्ते पर हम चल रहे हैं, इसलिए चीजें आएंगी और जाएंगी।

महोदय, मैं अक्सर कहता हूं और इस बार भी दोहराऊंगा कि -

"दौर है संगे आज़माई का और हम आईना सज़ाते हैं,

तुम हवाओं को हौसला बख्शो, हम चिरागों की लौ बढ़ाते हैं।"

हम चिरागों की लौ बढ़ा रहे हैं। पत्थर मारिए, विरोध करिए, आरोप लगाइए, लेकिन विकास के रास्ते में रोड़े मत अटकाइए। यह संकल्प है और हम इस संकल्प को लेकर आगे बढ़ रहे हैं।

उपसभापति महोदय, एक तरफ बिचौलिए, एक तरफ बेईमानों की नाकेबन्दी, करप्शन और कुशासन का एक पूरा का पूरा माहौल खत्म किया है। कहीं पर करप्शन और कुशासन की जुगलबन्दी हो जाती है, तो वह अपने साथ चलता रहेगा। यह राजनीति है।

महोदय, मैं एक आखिरी बात कहना चाहता हूं जो बहुत महत्वपूर्ण है। यह बात देश के लिए तो गर्व की है, लेकिन जो माननीय सदस्य बैठे हुए हैं, उनके लिए भी गर्व की बात है। मैं अभी अखबार पढ़ रहा था, उसमें जो पूरे देश में टेररिज्म है और टेररिज्म से जुड़े हुए जो हाउस हैं, इस्लामिक स्टेट, “How the Islamic State is guiding lone wolves across the world.” पूरी दुनिया को इस्लामिक स्टेट और टेररिज्म किस तरह से अपने शिकंजे में जकड़ रहा है, यह लिखा था। हमें इस बात को कहने में गर्व और

खुशी हो रही है कि मेरा देश, मेरे देश की संस्कृति, मेरे देश का संस्कार और मेरे देश के सभी लोगों का जो एक सद्भाव का संकल्प है, उसका नतीजा है कि कि आईएसआई जैसे आतंकवादी और शैतानी संगठन, इससे पहले अलकायदा जैसे आतंकवादी और शैतानी संगठन मेरे देश की धरती पर किसी भी तरह से अपनी जड़ें नहीं जमा पाए और उन जड़ों को जमाने की जहां भी कोशिश हुई, मेरे देश के सारे लोगों ने, सबसे आगे बढ़कर मुसलमानों ने, ऐसी ताकतों का विरोध किया और ऐसी ताकतों के खात्मे के लिए सबसे आगे बढ़े। ...(व्यवधान)...

श्री उपसभापति : प्लीज बैठिए।

श्री मुख्तार अब्बास नक़वीः उपसभापति महोदय, यह जो आतंकवाद है, यह जो radicalism है, यह किसी एक देश, एक मज़हब और एक समाज के लिए चुनौती नहीं है, बल्कि यह पूरी दुनिया की इंसानियत के लिए एक बहुत बड़ी चुनौती है।

(3एफ/पीएसवी पर जारी)

PSV-KLS/3F/4.20

श्री मुख्तार अब्बास नक़वी (क्रमागत)ः ऐसी जो हैवानी ताकतें हैं, ऐसी ताकतें जो इंसानियत की दुश्मन हैं, उन ताकतों का खात्मा हम सब को मिल कर करना होगा। मेरे भारत के समाज के सभी लोग पूरी दुनिया के लिए एक आदर्श हैं। ऐसी ताकतें, जोकि पूरी दुनिया में अपना खतरनाक जाल बिछाती हैं, जाल बिछाकर अपने काम को सफलता के साथ अंजाम दे रही हैं, यहाँ सफल नहीं हो पा रही हैं। यहाँ पर अगर किसी परिवार में आईएस जैसे संगठन के लोग अपनी जड़ें जमाने की कोशिश करते हैं, तो

उस परिवार के लोग सुरक्षा एजेंसीज़ को इन्फॉर्मेशन देते हैं कि मेरे परिवार का बच्चा ऐसे संगठनों के चंगुल में आ रहा है, आप इसका इंतजाम करिए। ऐसी एक-दो घटनाएँ हुई भी हैं। मुझे लगता है कि यह हमारे देश की संस्कृति और संस्कार का नतीजा है और इस देश में जो विकास और विश्वास का माहौल बना है, यह उसका नतीजा है। मेरा यह कहना है कि हम राजनैतिक रूप से जंग करते रहेंगे, राजनैतिक रूप से लड़ाई लड़ते रहेंगे, लेकिन देश के सम्मान, देश के स्वाभिमान और देश की सुरक्षा पर हमें एक स्वर में, एक आवाज़ में बात करनी चाहिए। यही वह वजह है कि आज हमारा देश सुरक्षित भी और आज हमारा देश पूरी दुनिया के लिए एक आदर्श भी बना हुआ है। उपसभापति महोदय, आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।

(समाप्त)

SHRI JAIRAM RAMESH: Sir, one minute. Sir, the hon. Minister has used a piece of paper to give some figures on the employment in the Central Government. I would request him to authenticate that paper and lay it on the Table of the House so that we know what the source of this data is. He has said that employment of minorities has gone up from 5 per cent to 9 per cent in two years.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: He did not say he is quoting.

श्री जयराम रमेशः क्या चमत्कार है! दो साल में 5 प्रतिशत से 9 प्रतिशत हुआ है, उसको ऑथेंटिकेट करिए, ताकि हम भी जानें कि आपके डेटा का क्या सोर्स है।

MR. DEPUTY CHAIRMAN: See, he did not say that he is quoting.

श्री मुख्तार अब्बास नक़वी: पहली बात, मैं आपको ऑथेंटिकेट करूँ ...(व्यवधान)...

श्री उपसभापति: इसे छोड़िए। ...(व्यवधान)...

श्री मुख्तार अब्बास नक़वी: मैं पहले आपको बता देता हूँ कि यह जो फिगर है, यह मैंने हिन्दी में बोली थी, मैं दोबारा इंग्लिश में बता देता हूँ।

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Mr. Minister, you did not say that you are quoting, therefore, no need of authentication. But, however, if you think he has misled the House, there are other ways of tackling it.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Ahmed Patelji.

श्री अहमद पटेल (गुजरात): उपसभापति महोदय, मैं राष्ट्रपति जी के अभिभाषण पर रखे गये धन्यवाद प्रस्ताव पर बोलने हेतु खड़ा हुआ हूँ और आपने मुझे यह अवसर दिया है, इसके लिए मैं आपका बहुत-बहुत धन्यवाद करता हूँ।

महोदय, मैं अपना वक्तव्य शुरू करूँ, उससे पहले मैं नक़वी साहब को सिर्फ इतना ही कहना चाहूँगा कि आपने कहा कि सब कुछ ठीक है, माइनॉरिटी, अक़ल्लियत, एससी, एसटी सब कुछ ठीक है, सब ठीक हो गया है, मैं आपको इतना ही कहना चाहूँगा कि:

"जलते हुए घरों की रोशनी शहरों को जगमगा चुकी,
अब तो खुदा के वास्ते दिल के दिये जलाएँ।
अब न जले कोई मकां, अब न उठे कोई धुआँ,

आग लगी जो बुझ गई, आग दबी बुझाइए।"

जो दबी हुई आग है, कम से कम उसको बुझाने की कोशिश करेंगे, तो ही मैं समझता हूँ कि देश का कल्याण हो पाएगा, देश का विकास होगा, देश की प्रगति होगी, देश तरक्की के रास्ते पर आगे बढ़ेगा। यू.पी. में अभी जो हो रहा है, जिस तरह से भाषण हो रहे हैं, जिस तरह से बातें हो रही हैं, कम से कम इसे तो रोकने की कोशिश करिए, तो मेरे ख्याल से एक अच्छा माहौल हो जाएगा और देश तरक्की करेगा।

उपसभापति महोदय, राष्ट्रपति जी के अभिभाषण में मुझे एक दिलचस्प बात, इंटरेस्टिंग बात यह लगी कि उन्होंने जो शुरुआत की है, उन्होंने तीन महत्वपूर्ण ऐतिहासिक घटनाओं से शुरुआत की है। सबसे पहले गुरु गोबिंद सिंह जी, जिनकी 350वीं जयंती मनाने जा रहे हैं, दूसरे, रामानुजाचार्य जी की 100वीं जयंती मनाने जा रहे हैं और तीसरी बात चम्पारण सत्याग्रह की 100वीं वर्षगांठ मनाने की कही है। लेकिन मैं याद दिलाना चाहूँगा कि गुरु गोबिंद सिंह जी ने हमें क्या सिखाया- सामूहिक, लोकतांत्रिक व्यवस्था में विश्वास करो, न कि सिर्फ एक व्यक्ति पर। इसीलिए वे पाँच प्यारों के साथ आए और उन्होंने विभाजन और घृणा की राजनीति को अस्वीकार करना सिखाया। मैं नहीं समझता कि यहाँ पर किस-किस के साथ मशवरा करके प्रधान मंत्री जी आगे चल रहे हैं। मुझे खुशी होती अगर रवि शंकर प्रसाद जी का और आपका नाम भी इसमें होता या आपके साथ ही परामर्श और विचार करके प्रधान मंत्री जी आगे बढ़ते, तो मैं समझता हूँ कि शायद नोटबंदी नहीं हो पाती।

(3जी/वीएनके पर जारी)

VNK-SSS/3G/4.25

श्री अहमद पटेल (क्रमागत) : लेकिन आपको पता ही नहीं था कि नोटबंदी हो रही है या demonitisation का निर्णय लिया गया है, क्योंकि जहां तक मैंने अख़बार में पढ़ा है और जो सुना है कि मंत्रिमंडल की बैठक बुलाई गई, बैठक बुलाने के बाद जब तक राष्ट्र के नाम संदेश नहीं हुआ, तब तक मंत्रियों को बाहर नहीं जाने दिया गया। इससे ज्यादा शर्म की बात और क्या हो सकती है? सिर्फ टेलीविजन पर दिखाया गया। मैं समझता हूँ कि अगर आप गुरु गोबिन्द सिंह जी की 350वीं जन्म जयंती मनाने जा रहे हैं, तो कम से कम इनका जो जीवन है, उससे कुछ सीख लीजिए।

आपने दूसरी जो महत्वपूर्ण बात की है, वह रामानुजाचार्य की है। उन्होंने अपने जीवन को तीन विचारों के लिए समर्पित किया - विनम्रता और दया के लिए। उनकी शिक्षा का सार यह था कि प्रत्येक व्यक्ति अपने अंदर झांके। हर एक व्यक्ति के अंदर जगाने वाला होता है। रवि शंकर प्रसाद जी बात कर रहे थे कि कोई जगाने वाला आया और लागों ने अपनी-अपनी गैस सब्सिडी भी वापस कर दी। आप जो बात कर रहे थे, लेकिन कोई बाहरी व्यक्ति हमें जगा नहीं सकता है। अगर हमें कोई जगा सकता है, तो हमारी जो अन्दरूनी शक्ति है, वही हमें जगा सकती है। हमने चम्पारण सत्याग्रह से क्या सीखा? गरीबी और हाशिये पर खड़े लोगों के शोषण के खिलाफ संघर्ष और सत्याग्रह। जब अंग्रेज सरकार ने किसानों और आदिवासियों के अधिकारों को छीनने की कोशिश की थी, उनका हक लेने की कोशिश की थी, तब वह सिर्फ कांग्रेस पार्टी ही थी, जो आगे आई और चम्पारण और खेड़ा के सत्याग्रह के बाद गांधीजी 'महात्मा'

कहलाए और वल्लभभाई पटेल 'सरदार' कहलाए। मैं इस सरकार से बड़ी विनम्रता से पूछना चाहता हूँ कि राष्ट्रपति जी के अभिभाषण में इन ऐतिहासिक घटनाओं का उल्लेख तो किया गया और आप जश्न भी मनाने जा रहे हैं, लेकिन क्या सरकार ने इन घटनाओं से कुछ सीखा भी है या सीखने वाले भी हैं? मैं सरकार से सिर्फ चार सवाल पूछना चाहता हूँ। आप ये सेलिब्रेशन्स तो करने जा रहे हैं, जन्म जयंती भी मनाने जा रहे हैं, लेकिन क्या नफरत की राजनीति खत्म हुई? क्या वास्तव में सबकी राय को शामिल करके निर्णय हो रहा है, जो गुरु गोबिन्द सिंह ही ने हमें सिखाया था? क्या इस सरकार में विनम्रता है, जो रामानुजाचार्य जी को प्रिय थी? क्या किसानों और हाशिये पर खड़े लोगों का शोषण बंद हो गया है, जो चम्पारण और खेड़ा के सत्याग्रह ने हमें सिखाया था? सिर्फ जश्न मनाने से कुछ नहीं होगा, सिर्फ इवेंट क्रिएट करने से कुछ नहीं होता। जो जनता का पैसा है, उससे आप इवेंट क्रिएट कर दीजिए और लोगों के सामने symbolic कोई चीज रख दीजिए, लेकिन लोगों का और जनता का भला नहीं होता। मैं यह कहना चाहूंगा कि यह जो आपकी मानसिकता है, जो mentality है कि सिर्फ इवेंट क्रिएट करो, advertisement करो, publicity करो और कुछ हासिल कर लो। मैं समझता हूँ कि आपको इस मानसिकता को बदलने की जरूरत है।

मैं समझता हूँ कि इस मोशन के जो मूवर थे, जो धन्यवाद कर रहे थे, उन्होंने कहा कि देश बदल रहा है, परिवर्तन हो रहा है, बदलाव हो रहा है। मैं समझता हूँ कि न तो आप देश को बदलने की कोशिश कर रहे हैं, न तो परिवर्तन की बात कर रहे हैं, लेकिन ढाई साल में आपने सिर्फ बदले की भावना से काम किया, जिसे 'प्रतिशोध' कहते

हैं। आपके दिल में वह ज्वाला है कि जो हमारे प्रतिपक्ष हैं या जो हमारे विरोधी हैं, उनसे किस तरह से बदला लिया जाए। अगर यह नहीं होता, तो मैं समझता हूँ कि जो पंडित जवाहरलाल नेहरू जी हैं,..... आपने किस तरह से राष्ट्रपति जी के एक अभिभाषण में से उनके नाम को निकालने की कोशिश की, यह एक शर्म की बात है। राजीव जी, जिन्होंने अपने प्राणों की आहुति दी,..... क्या पंडित जवाहरलाल नेहरू जी ने कुछ नहीं किया? इतने सालों में आज देश जहां पर खड़ा है, उसमें अगर सबसे ज्यादा किसी का हिस्सा है, तो मैं समझता हूँ कि वह उनका है, जिन्होंने प्लानिंग की। बाकी औरों का भी है, सरदार वल्लभभाई पटेल, मौलाना आज़ाद, लालबहादुर शास्त्री, इंदिरा जी, राजीव जी, अटल बिहारी वाजपेयी जी, कहीं न कहीं सभी प्रधान मंत्रियों का हिस्सा है।

(3एच/एनकेआर-एनबीआर पर जारी)

NKR-NBR/3H/4.30

श्री अहमद पटेल (क्रमागत) : लेकिन आपने बदले की भावना से, जहां पंडित जवाहरलाल नेहरू जी ने इस देश के लिए काफी काम किया, आप उनका नाम भी निकालने की कोशिश कर रहे हैं। उन्हें भुलाने की कोशिश कर रहे हैं। इंदिरा जी के नाम को भुलाने की कोशिश कर रहे हैं। यहां तक कि राजीव जी, जिन्होंने अपने प्राणों की आहुति दी, सद्भावना से, आपने उनका नाम भी हटा दिया। देश के सभी लीडरों का देश के विकास में कहीं-न-कहीं हिस्सा रहा है। Recently, आपने जी.एस.पी.सी. जिसमें इतना स्कैम हुआ, उसको ONGC में मर्ज तो कर दिया और राजीव जी ने ONGC के लिए जो काम किया, उसके बिल्ले से भी आपने उनका नाम हटाने की

कोशिश की। यह बदले की भावना की राजनीति है और आप बात करते हैं गुरु गोबिन्द सिंह जी की, जिन दूसरे महापुरुषों की जयंती है, उनकी जन्म जयंती को मनाने की। आप करते कुछ हैं और दिखाते कुछ हैं। कम-से-कम उनके जीवन से कुछ तो सीखने की कोशिश कीजिए।

आप देखें कि अनेक विश्वविद्यालयों में वहां के छात्रों के साथ क्या हुआ? आपका सिर्फ एक ही लक्ष्य है कि किसी तरह से प्रतिशोध या बदला लिया जाए। मैं नहीं समझता कि आप किस चीज का बदला लेना चाहते हैं? किस चीज के प्रतिशोध के लिए आप आगे बढ़ रहे हैं? मैं यहां आपसे एक बात कहना चाहूंगा। जब देश में भारतीय जनता पार्टी का जन्म भी नहीं हुआ था, तब से कांग्रेस पार्टी ने, आजादी के इतिहास में जिन लोगों ने अपने बलिदान दिए, शहादतें दीं और आजादी के बाद भी, आप जानते हैं कि देश को आर्थिक तौर पर आजाद करने के लिए, इस देश को एक और अखंडित रखने के लिए जिन्होंने अपने प्राणों की आहुति दी, सरदार बेअंत सिंह जी ने दी, इंदिरा जी ने दी, राजीव जी ने दी, आप लाख कोशिश कर लें लेकिन कभी भी कांग्रेस-मुक्त भारत नहीं बना सकते या इंदिरा जी, राजीव जी, पंडित जी, जिन लोगों ने कुछ किया है, उनका नाम आप निकाल नहीं सकते, क्योंकि देश को बनाने में हमारा खून भी शामिल है।

"इस रंगे गुलशन में हमारा खून भी शामिल है,

और यह रंग वह नहीं, जो मिट जाए लग जाने के बाद।"

मैं समझता हूं कि आपने पिछले तीन सालों में अगर कुछ किया है, तो देश की एजेन्सियों का दुरुपयोग कैसे किया जाए, यह किया है। विचारों में मतभेद हो सकता है लेकिन यह मतभेद कभी मनभेद में परिवर्तित नहीं होना चाहिए। अगर आपके साथ कोई सहमत नहीं है, पॉलिसी या विचारधारा में, तो उसे परेशान नहीं किया जाता। आज क्या हो रहा है? आज किस तरह से नियुक्तियां हो रही हैं? जो एजेन्सीज़ के हैड्स हैं, उन्हें एक्सटेंशन दिया जा रहा है। उन्हें कहा जा रहा है कि आपको प्रमोशन मिलेगा। अब न्यायालय ने उनके मामले में क्या कहा? Extra Constitutional Authorities के घरों पर एजेन्सीज के हैड्स जाकर वहां से ऑर्डर्स लेते हैं। इससे ज्यादा शर्म की बात दूसरी क्या हो सकती है? अगर टेलिफोन रिकॉर्ड्स निकालकर देखें, तो आपको पता चलेगा कि ऑर्डर्स कहां से लिए जाते हैं?

तीन सालों में, जो आपके साथ सहमत नहीं हैं, उन्हें या तो आपने कम्युनल बना दिया या एंटी-नेशनल बना दिया। मेरे विचार से इससे ऊपर उठने की जरूरत है। क्या यही आपका परिवर्तन है, क्या यही आपका बदलाव है?

नोटबंदी की बात यहां काफी हुई। मैं उसमें आपका ज्यादा वक्त लेना नहीं चाहता लेकिन जैसा मैंने शुरू में कहा, आरंभ में हम लोगों ने भी कहा और नोटबंदी या demonitization को सपोर्ट किया, क्योंकि प्रधान मंत्री जी ने जैसा कहा, हमने माना कि इससे भ्रष्टाचार कम होगा, इससे काला धन बाहर आएगा, इससे देश में जो टैररिस्ट एक्टीविटीज हैं, आतंकवाद रुक जाएगा, लेकिन अल्टीमेटली क्या हुआ? कुछ नहीं हुआ। आपको कुछ नहीं मिला, बल्कि आपने पूरे देश के लोगों को लाइन में खड़ा कर

दिया, चाहे वह बूढ़ा हो, जवान हो, बच्चा हो, मां हो, बेटी हो, बहू हो, कोई भी हो। मैं एक ही उदाहरण देना चाहूंगा। एक बूढ़ा बाप लाइन में खड़ा हुआ था। उसकी बेटी की शादी थी। बैंक से पैसे मिल जाएं तो बेटी की शादी कर सके लेकिन बेचारा लाइन में खड़ा-खड़ा मर गया। उसका निधन हो गया, इंतकाल हो गया। फिर बेटी लाइन में लग गई क्योंकि अपने बाप की अंतिम क्रिया के लिए उसके पास पैसे नहीं थे। इससे बड़ी अफसोस की बात और क्या हो सकती है? बिना सोचे-समझे आपने जो फैसला लिया, अल्टीमेटली नोटबंदी से क्या मिला? क्या सारे-के-सारे पैसे आ गए? कुछ ज्यादा पैसे भी आ गए? मैं समझता हूं कि इससे कोई फायदा नहीं हुआ। आपकी आर.बी.आई. या रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया किस तरह से काम कर रही थी - क्या रिवर्स बैंक ऑफ इंडिया बन गई थी? हर रोज़ नए फतवे निकल रहे थे। नियम चेंज किए जा रहे थे। नोटिफिकेशन निकाले जा रहे थे। आखिर, नए नोट कहां गए जो इतने सारे आपने प्रिंट किए थे?

(3J/DS पर जारी)

DS-USY/4.35/3J

श्री अहमद पटेल (क्रमागत) : आखिर जो भी है, जब आपने इतने सारे नोट प्रिंट किए थे, तो नये नोट कहाँ गये? इसमें अभी भी restrictions हैं, मैं अपने पूरे पैसे नहीं निकाल सकता। आखिर पैसा कहाँ गया? बाहर 10 प्रतिशत, 20 प्रतिशत, 30 प्रतिशत पर लोग अपने काले धन को एक्सचेंज कर रहे थे। मैं समझता हूँ कि यह सबसे बड़ा स्कैम है और इसके बारे में जाँच होनी चाहिए कि ये पैसे कैसे एक्सचेंज हो रहे थे? ये लोग कौन थे,

जो पैसे एक्सचेंज कर रहे थे, इसके बारे में भी हमें सोचना होगा, इसके बारे में इन्वेस्टिगेशन करनी होगी।

दुनिया में हमारी अर्थव्यवस्था तेजी से आगे बढ़ रही थी। यूपीए के समय में 8 प्रतिशत ग्रोथ रेट थी, लेकिन अब आप पॉलिसी पैरालिसिस के नाम पर 6.5 प्रतिशत की वृद्धि को बेहतरीन गिनाने की कोशिश कर रहे हैं और वह भी नई गणना से! हक़ीकत यह है कि आप अपने कार्यकाल के दौरान 8 प्रतिशत के ग्रोथ रेट कभी हासिल नहीं कर पाए। चाहे आप यह कह लें कि आप 8 प्रतिशत के ग्रोथ रेट पर पहुँच जाएँगे, लेकिन मैं नहीं समझता कि आप 8 प्रतिशत के ग्रोथ रेट पर पहुँच पाएँगे। इससे आप क्या करना चाहते हैं? क्या यही आपका परिवर्तन है, यही बदलाव है? कहा जा रहा है कि देश बदल रहा है, परिवर्तन हो रहा है, लेकिन कुछ भी नहीं बदला। उस पर मैं आगे आऊँगा, लेकिन जहाँ तक एग्रीकल्चर का सवाल है, हमारे मंत्री जी यहाँ बैठे हैं, ये अच्छी तरह से जानते हैं कि किसानों की क्या हालत है। वे परेशान हैं, उनकी स्थिति दयनीय है। आपने नोटबंदी का डिसीज़न उस वक्त पर लिया, जब उनकी रबी का प्रोडक्शन आने वाला था। उसे वे लोग बेच नहीं पाए और जो नई फसल उनको उगानी थी, उसके लिए उनको पैसे नहीं मिल रहे थे, क्योंकि उनके पास बीज के पैसे नहीं थे, खाद के पैसे नहीं थे। आपने इन लोगों को बहुत ही दयनीय स्थिति में डाल दिया। किसानों के नाम पर आप कह रहे हैं कि 40 प्रतिशत किसान कल्याण में वृद्धि हुई, लेकिन किसानों के लिए बजट में सिर्फ 6.14 परसेंट वृद्धि हुई।

राष्ट्रपति जी ने कृषि विकास योजना की बात की है। बजट तो आपने 12 प्रतिशत कम कर दिया और आप बैंकों द्वारा अनिवार्य रूप से दिए जाने वाले कर्ज को अपनी उपलब्धि के रूप में गिना रहे हैं। उसमें आपने कमी कर दी। आपने कृषि योग्य भूमि में 57 प्रतिशत सिंचाई की बुनियादी सुविधाओं की बात की है। आपने कहा है कि सिंचाई की सुविधाओं में 57 प्रतिशत की वृद्धि होगी और उसके लिए 1,450 करोड़ रुपये रख दिए गए, लेकिन उसमें से हज़ार करोड़ रुपये तो ब्याज में जाएँगे, आपके पास क्या बचेगा? सिर्फ 400 करोड़ रुपये! फ्लैगशिप प्रोग्राम- प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना, लेकिन जिन्होंने कृषि के लिए लोन नहीं लिया है, उनके कवरेज में सिर्फ 3 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। यूपी, बिहार में जब फ्लड आया, जब बारिश आई, तो इस स्कीम का लाभ नहीं मिला। ये सब बातें पेपर पर हैं, मैं इनकी डिटेल में नहीं जाना चाहता, लेकिन आपको जो सारी उपलब्धियाँ हैं, उनको मैं गिनाने की कोशिश कर रहा हूँ।

राष्ट्रपति जी ने अपने पहले के अभिभाषण में कहा था- Per drop, more crop. पता नहीं वह ड्रॉप भी कहाँ गया और वह क्रॉप भी कहाँ गयी, लेकिन जब drought आया तो सरकार का रवैया कुछ और ही था। न कोई टीम भेजी गई, न उसे सीरियसली लिया गया। Drought में किसी को फायदा नहीं मिला और न तो किसी को मदद मिली। मेरे ख्याल से ये जो उपलब्धियाँ आप गिनाने की कोशिश कर रहे हैं, ये सिर्फ कागजी हैं। बेचारा किसान मेहनत करता है, रात और दिन मजदूरी करता है, लेकिन ultimately उसको क्या मिला? आप कह रहे हैं कि किसान को बहुत कुछ मिला है, तो इतनी आत्महत्याएँ क्यों हो रही हैं? किसान आज परेशान है, वह मारा-मारा घूम रहा है,

उसकी कोई सुनने को तैयार नहीं है। आपने किसानों की उपज का 50 प्रतिशत मुनाफा देने की बात की थी, लेकिन वह सिर्फ जुमला बनकर रह गया। उसके बावजूद, आपने यह कहना शुरू कर दिया कि किसानों की आय को हम लोग वर्ष 2020 में दोगुना कर देंगे। पता नहीं आप वर्ष 2020 में कहाँ से उसको दोगुना करेंगे? क्योंकि आप तो करने वाले नहीं हैं, क्योंकि वर्ष 2020 में जब आप ही नहीं रहेंगे तो उनकी आय को आप कहाँ से दोगुना करेंगे?

किसानों के बाद अब मैं एससीज़ और एसटीज़ पर आता हूँ, जिनके बारे में शरद यादव जी और सीताराम येचुरी जी भी बात कर रहे थे। इस सरकार ने सिर्फ किसानों से नहीं, बल्कि एससीज़ और एसटीज़ के साथ भी विश्वासघात किया है, उनको * किया है। वर्ष 2016 में रोहित वेमुला से लेकर उना में दलितों पर अत्याचार हुआ। पिछले साल दलित उद्यमियों के लिए Stand-up India की शुरुआत की थी, आपने 2,000 करोड़ रुपये देने का वादा किया था, लेकिन कितना दिया? सिर्फ 200 करोड़ रुपये! यह * नहीं है तो और क्या है? यह है आपका बदलाव, यह है आपका परिवर्तन?

(3के/एमसीएम पर जारी)

MCM-PK/3K/4-40

श्री अहमद पटेल (क्रमागत) : मैं इकोनॉमिक सर्वे की बात कर रहा था, लेकिन शर्म की बात तो यह है कि इकोनॉमिक सर्वे में कहीं पर दलित का जिक्र नहीं किया गया। यहां आप बात कर रहे हैं एस0सी0 और दलित की। वजह क्या है, एस0सी0, एस0टी0 भाई-

---

***Expunged as ordered by the Chair.**

बहन जितना हिस्सा लेने के लिए हकदार हैं, उसे आधा कर दिया गया है। मैं आपको जो कम्युनिटी है, उसके बारे में जिक्र करना चाहूंगा। "In the merged scenario of Plan and Non-Plan, estimates following the Jadhav guidelines mandate allocating a minimum of 4.63 per cent under the Scheduled Castes Sub-Plan and 2.39 per cent under the Tribal Sub-Plan of the total Budgetary allocation of the Union." In that case, the denied and misallocated amount should total Rs.71,139 crores for the SC and Rs.34,000 crores for the ST." लेकिन आपने दिया क्या, एस0सी0 के लिए 4.63 परसेंट होना चाहिए, एस0टी0 के लिए 2.39 परसेंट होना चाहिए, जिसको आपने आधा करके रख दिया है। दलितों के लिए जो स्पेशल कम्पोनेंट प्लान था, उसको आपने कल्याण योजना में बनाकर रख दिया एस0सी0, एस0टी0 के लिए। रवि शंकर प्रसाद जी बात कर रहे थे दिव्यांग की, विकलांग की। प्रधान मंत्री जी ने इसका नाम विकलांग से दिव्यांग कर दिया। वैसे बहुत बड़ी बात कर दी। लेकिन मैं आपको कहना चाहूंगा कि जिस दिन उन्होंने यह किया तो उसी दिन जो एसोसिएशन थी, इसको उन्होंने अपोज़ किया। उन्होंने यह कहा कि "Several Disabled People's Organisations on Friday strongly objected to the use of the term 'Divyang' to address the disabled people community and urged Prime Minister, Shri Narendra Modi, not to use it and to replace it as 'Viklang'." वे लोग खुद विरोध कर रहे हैं, सिर्फ आपको क्योंकि कहीं न कहीं कुछ परिवर्तन करना है, कहीं न कहीं कुछ चेंज करना है, कहीं न कहीं कुछ बदलाव करना

है, लेकिन कभी यह भी नहीं सोचना है कि जो आप परिवर्तन कर रहे हैं या जो आप बदलाव कर रहे हैं, वह आप सही मायने के लिए कर रहे हैं, सही चीज के लिए कर रहे हैं या गलत चीज के लिए कर रहे हैं। इस देश में दिव्यांग की जो संख्या है, वह 2 करोड़ 60 लाख है। उसमें से एंप्लॉएबल कितने हैं? वे 1 करोड़ 60 लाख हैं। उसमें सिर्फ employed कितने हैं? 60 per cent are employed. अभी भी एक करोड़ ऐसे डिसएबल्ड हैं दिव्यांग या विकलांग, जिनको रोजगार नहीं मिलना है। सरकार दिव्यांगों के लिए बड़ी बातें करती है, लेकिन बजट में The Right to Disabilities Act के लिए कोई प्रावधान नहीं है। दो प्रोविजन हैं। यू0पी0ए0 टाइम पर जो 5 प्रतिशत का प्रावधान था, वह घटाकर आपने 4 प्रतिशत कर दिया। मिनिस्ट्री ऑफ सोशल जस्टिस की वेबसाइट पर डिसएबल के जॉब अभी भी अवेलेबल नहीं हैं। जो लिस्टिंग है, वह अवेलेबल नहीं है कि कहां-कहां जॉब्स उपलब्ध हैं, कहां-कहां नौकरियां उपलब्ध हैं? वह भी अवेलेबल नहीं है। जो मुझे कहा गया है, कितना सही है, कितना गलत है, आप वेरिफाई कर सकते हैं। जब प्रधान मंत्री जी गुजरात में चीफ मिनिस्टर थे, मैं नहीं समझता कि सरकारी नौकरी में विकलांग को या डिसएबल्ड को इतनी नौकरी या जॉब्स दी गई हों। इससे बड़ी शर्म की बात क्या हो सकती है? आप बात कर रहे हैं विकलांग की, दिव्यांग की, सबसे ज्यादा अगर कोई काम रहे हैं डिसएबल्ड के लिए, विकलांग के लिए और दिव्यांग के लिए, तो एन0जी0ओज़0 कर रहे हैं। जो जयपुर फुट है, वह बड़ा अच्छा काम कर रहा है। अभी मेरे यहां भी कैम्प किया था दो दिन के लिए। अगर वे अच्छी तरह से काम कर सकते हैं, उसका श्रेय अगर किसी को जाना चाहिए तो

यू0पी0ए0 की सरकार को जाना चाहिए, क्योंकि सी0एस0आर0 से जो फंड उनको मिल रहा है, उसी से वे काम कर रहे हैं और आप बात कर रहे हैं दिव्यांग की और विकलांग की। मैं समझता हूं कि सिर्फ यश लेने के लिए बात करना, यह सही बात नहीं है। मैं इस सरकार से यही कहना चाहूंगा कि इस सरकार पर वास्तविक सेवाओं के बजाए केवल भाषण सेवा का जुनून सवार है, सिर्फ जुमला सेवा का जुनून सवार है। यह सरकार यह नहीं सोचती कि जमीन पर क्या अच्छा लगता है, बल्कि यह सरकार यह सोचती है कि विज्ञापन में क्या अच्छा लगता है, सिर्फ एडवर्टाइजमेंट, सिर्फ फोटोग्राफ। हर जगह एडवर्टाइजमेंट, जैसे यह सरकार पूरी विज्ञापन पर चल रही है, एडवर्टाइजमेंट पर चल रही है। आपके पैसे सुरक्षित हैं, सिर्फ यह कहने से तो काम नहीं चलता। जब बैंक में जाते हैं तो वहां उनको अपने पैसे भी नहीं मिल सकते। अपने पैसे जो खुद नहीं ले सकते महीनों तक, उसे आप कह दो कि आपके पैसे सुरक्षित हैं। हरेक जगह जहां आप जाओ, आपको एडवर्टाइजमेंट मिलेगा।

सब्सिडी की बड़ी बात हो रही थी, महिलाओं को कहीं से सब्सिडी लेकर गैस के कनेक्शन दिए गए। कोई मुफ्त में तो नहीं दिए गए। जो भी बिल आता है, वह उसकी पेमेंट कर रही है। सिर्फ एक कनेक्शन आपने दिया होगा, बहुत अच्छी बात है। हम उसका स्वागत करते हैं।

(3L/SC पर जारी)

SC-PB/4.45/3L

श्री अहमद पटेल (क्रमागत) : हम उसका स्वागत करते हैं, लेकिन एससी, एसटी, - जो downtrodden हैं, जो ओबीसी हैं, उनके बजट में आपने कटौती की है। उनकी जो सारी योजनाएं थीं, उनके जो सारे प्रोग्राम थे, वे बंद हो गए। आप महिलाओं की बात कर रहे हैं। उस दिन रवि शंकर प्रसाद जी कह रहे थे कि अब की बार एक महिला अधिकारी द्वारा परेड का नेतृत्व करना देश के लिए गर्व की बात है। अच्छी बात है। We are also proud of that. ज्यादा से ज्यादा महिलाएं आएं, यह बहुत ही जरूरी है, लेकिन रक्षा मंत्री जी ने क्या कहा? रक्षा मंत्री जी ने यह कहा कि सेना में कोई महिला यूनिट नहीं होगी। इससे बड़ी शर्म की बात क्या हो सकती है? 'No plan for women in army combat role', Parrikar tells Rajya Sabha. इससे बड़ी शर्म की बात क्या हो सकती है? एक तरफ आप कह रहे हैं कि महिलाओं को हम आगे बढ़ा रहे हैं। दूसरी तरफ जो आपके डिफेंस मिनिस्टर हैं, जो रक्षा मंत्री हैं, वे इस तरह की बात कर रहे हैं।

सर, 31 दिसम्बर, 2016 को प्रधान मंत्री जी ने कहा कि "गर्भवती महिलाओं के लिए नयी योजना की घोषणा" अब उन्हें पता ही नहीं था कि उनके लिए पहले से ही योजना थी। हकीकत यह है कि फूड सिक्योरिटी योजना के तहत यह अधिकार दिया गया था, लेकिन सरकार ढाई साल तक यह बात टालती रही और फिर announcement कर रहे हैं कि जैसे उन्होंने कर दिया। आप ऐसी चीज़ें क्यों कर रहे हैं? क्या यह आपका परिवर्तन है? क्या यह आपका बदलाव है? महिलाओं के आरक्षण का क्या हुआ? पुलिस आधुनिकीकरण की बात हो रही है, लेकिन उसका जो फंड है, जो

धन है, जो राशि उन्हें मिलनी चाहिए, उसमें कटौती की गयी है। जीडीपी के हिसाब से डिफेंस में होने वाले खर्च में कटौती की गयी है। क्या यह आपका परिवर्तन है? क्या यह आपका बदलाव है?

आपने डिजिटल इंडिया के बारे में कहा। सन् 2016 तक ये लोग सभी ग्राम पंचायतों को broadband से जोड़ने वाले थे। ये कह रहे थे कि broadband से हम सारी पंचायतों को जोड़ देंगे, लेकिन ultimately लक्ष्य क्या प्राप्त किया, target क्या प्राप्त किया - केवल 26 प्रतिशत। पता नहीं, 2016 भी निकल गया और सिर्फ 26 प्रतिशत को इन्होंने broadband से जोड़ा। "आधार" के लिए ये लोग कह रहे थे कि आप "आधार" ले आए - जरूर हम ले आए। रमेश जी बैठे हैं, लेकिन हम लोग, जो उनकी privacy है, जो उनकी व्यक्तिगत जानकारी है, उसकी रक्षा करना चाहते हैं। आज क्या हो रहा है? आज उनकी व्यक्तिगत जानकारियां लीक हो रही है।

इसी प्रकार उन्होंने JAM की बात की, जन-धन आधार मोबाइल के बारे में कहा। मूवर JAM की बात कर रहे थे। सच्चाई यह है कि आज आपकी सारी योजनाएं jam हो चुकी हैं, आपकी कोई योजना चल नहीं रही है। बजट में जिस तरह से प्रावधान होना चाहिए, अगर प्रावधान है भी, तो भी उसका implementation नहीं हो रहा है। आपने पुदुचेरी में बात की थी, 'Direct Benefit Transfer' की, लेकिन ultimately क्या हुआ - वह विफल हो गया, jam हो गया और फिर बंद हो गया। आप Smart Cities की बात कर रहे हैं। Smart Cities में अज़ीम प्रेमजी ने दो दिन पहले क्या कहा? उन्होंने कहा कि 'Smart Cities project more talk than action'. आप Smart Cities की बात कर रहे

हैं! अज़ीम प्रेमजी, जो आपकी तारीफ कर रहे थे, जो बात कर रहे थे कि बहुत अच्छी गवर्नमेंट है, आज वे आपको यह सर्टिफिकेट दे रहे हैं।

आप स्वास्थ्य की बात कर रहे हैं। स्वास्थ्य समिति के बारे में मैं कहना चाहूंगा। सर, उन्होंने एक और बात की थी - "स्वच्छ भारत" की बात। उन्होंने कहा था कि सन् 2016 तक 4 हज़ार शहर और 6 लाख गांव ODF, Open Defecation Free, खुले में शौच से मुक्त हो जाएंगे। पता नहीं उसका क्या हुआ? आपको जानकर आश्चर्य होगा कि सिर्फ 141 शहरों में आप यह काम कर पाए हैं और गांवों का तो अता-पता ही नहीं है कि वहां पर क्या स्थिति है? सफाई ऐसे नहीं होती है। आप कह रहे थे कि आपने तीन लाख toilets बना दिए, लेकिन जहां toilets हैं, वहां पानी का इंतज़ाम नहीं है। आप सफाई करने निकले हैं! अगर सफाई करनी है तो जो आपका झाड़ू है, वह साफ होना चाहिए। यहां तो आपका झाड़ू ही गंदा है, उससे क्या सफाई होगी? इसके लिए मानसिकता अच्छी होनी चाहिए। अगर मानसिकता सही है तो सफाई सही होगी। आप जो स्वच्छता की बात करते हैं, उसके लिए सबसे पहले अगर किसी चीज़ की जरूरत है तो आपकी जो मानसिकता है, उसे सही करना होगा। ..(व्यवधान).. मैं यह बात इसलिए कर रहा हूं कि आप परिवर्तन की बात कर रहे हैं, आप बदलाव की बात कर रहे हैं। उस दिन रवि शंकर प्रसाद जी बात कर रहे थे।..(व्यवधान).. गुजरात में आपको मालूम है। आपको मालूम है, अभी भी सौराष्ट्र में किस तरह से हो रहा है? आप बहुत अच्छी तरह से जानते हैं।

(3एम-जीएस पर जारी)

SKC-GS/3M/4.50

श्री अहमद पटेल (क्रमागत): आप बहुत अच्छी तरह से जानते हैं। अच्छा, उस दिन रवि शंकर प्रसाद जी महिलाओं के बारे में कह रहे थे। वे पी.वी. सिंधु, साक्षी मलिक, दीपा करमाकर के बारे में बात कर रहे थे, लेकिन मैं उनको याद दिलाना चाहता हूं कि जब उनकी सरकार नहीं थी, तब भी ये लोग उत्कृष्ट और बेहतरीन प्रदर्शन किया करते थे, ऐसा नहीं है कि आपकी सरकार ने कुछ किया, इसीलिए उन्हें मेडल मिला या अवार्ड मिला। वर्ष 2014 के राष्ट्रपति अभिभाषण में खेल प्रतिभा खोज प्रणाली बनाने की बात कही थी, पता नहीं उसका क्या हुआ? इस बात को तीन साल हो गए। आपके सब वायदे ही वायदे हैं। ...(व्यवधान)...

युवक कार्यक्रम और खेल मंत्रालय के राज्य मंत्री (श्री विजय गोयल): खेल प्रतिभा वाली यह स्कीम तो अभी चल रही है। ...(व्यवधान)... बाकी आपने सत्य कहा है या असत्य कहा है, यह मुझे नहीं मालूम है। ...(व्यवधान)... उसमें इम्प्रूवमेंट हुआ है। ...(व्यवधान)...

श्री अहमद पटेल: खेल प्रतिभा खोज प्रणाली कैसी चल रही है, यह मुझे नहीं मालूम। ...(व्यवधान)... स्कीम ठीक तरह से तो चलनी चाहिए। ...(व्यवधान)... और अभी तो आप आए हैं, अभी तो छह-महीने, साल हुआ है। विजय गोयल जी, हम अपेक्षा करेंगे कि आप आगे चलकर कुछ अच्छा करें। ...(व्यवधान)... स्वास्थ्य नीति और स्वास्थ्य बीमा योजना की घोषणा पिछले साल की थी, वह भी लाल किले से घोषणा की गई थी। राष्ट्रीय शिक्षा नीति का क्या हुआ, मुझे नहीं मालूम है। सिर्फ घोषणाएं ही घोषणाएं हो

रही हैं, सिर्फ बातें ही बातें हो रही हैं, सिर्फ वायदे ही वायदे हो रहे हैं। अच्छा, नार्थ-ईस्ट के बारे में बात करते हैं। उत्तर पूर्व को तो अष्ट लक्ष्मी कहते हैं, लेकिन अष्ट लक्ष्मी के साथ आपने क्या किया? अरुणाचल की सरकार, जहां पर आप थे ही नहीं, क्योंकि आपको राष्ट्रपति के लिए वोट चाहिए, इसलिए वहां की सरकार गिरा दी। ...(व्यवधान)... अरुणाचल में भारतीय जनता पार्टी की सरकार बना दी और आज नागालैंड में क्या हो रहा है, इसे आप अच्छी तरह से जानते हैं। उत्तराखंड देवभूमि मानी जाती है और उत्तराखंड के साथ आपने छेड़खानी की, इसको आप अच्छी तरह से जानते हैं। जम्मू-कश्मीर के बारे में LoP ने बहुत कुछ बताया है, इसलिए मैं उसके बारे में ज्यादा समय नहीं लेना चाहता हूं।

अच्छा, आप लोग भ्रष्टाचार की बात कर रहे हैं। यह बहुत अच्छी बात है। भ्रष्टाचार के बारे में राष्ट्रपति जी ने अपने अभिभाषण में कहा था कि भ्रष्टाचार पर अंकुश लगाने के लिए लोकपाल का होना जरूरी है। यह वर्ष 2014 में कहा था और मेरी सरकार इसके लिए कानून बनाने का समर्थन करेगी और जरूरी नियमों का अनुपालन करेगी। इस बात को ध्यान में रखते हुए कि न्याय मिलने में देरी, न्याय नहीं मिलने जैसा है, बराबर है। मेरी सरकार हमारी न्याय प्रणाली में लम्बित पड़े हुए मामलों को निपटाने के लिए एक बहुकोणीय रुख अख्तियार करेगी। तीन साल हो गए हैं, क्या हुआ लोकपाल का? क्या हो रहा है न्यायपालिकाओं में ? शर्म की बात तो यह है कि फॉरमर चीफ जस्टिस को जजों के तबादले करने के लिए, नियुक्तियां करने के लिए रोना पड़ा। इससे बड़ी शर्म की बात और क्या हो सकती है? भ्रष्टाचार रोकने के लिए सबसे बड़ा

हथियार प्रवर्तन एजेंसियां होती हैं। वे एजेंसियां किस तरह से काम कर रही हैं, इसको आप अच्छी तरह से जानते हैं। प्रवर्तन एजेंसियां उनके अनुसार काम कर रही हैं, राजनीतिक विरोधियों की कार्यवाही के लिए जैसे ये एजेंसियां बनाई गई हों। मेरे ख्याल से ये बातें अच्छी नहीं हैं। इस साल यह बात फैलाई जा रही है कि जो अवॉर्ड योग्य पात्र हैं, उनको ही अवॉर्ड दिए गए हैं। श्री रवि शंकर प्रसाद जी बड़े जोरों से इस बात को कह रहे थे। मैं पूछना चाहता हूं कि पिछले सात साल में जो अवॉर्ड दिए गए, जो पुरस्कार दिए गए, क्या वे गलत दिए गए? क्या ए.पी.जे. अब्दुल कलाम आज़ाद योग्य नहीं थे? क्या सिस्टर निर्मला योग्य नहीं थीं? क्या जयपुर को बनाने वाले बी.आर. मेहता योग्य नहीं थे? हम भी गिनवा सकते हैं, तीन साल में कई नाम हैं, जिनको मैं गिनवा सकता हूं। गुजरात से अभी किसी को दिया है, मैं भी गिनवा सकता हूं कि किस तरह से पोलिटिकल कंसिडरेशन के तौर पर ये अवॉर्ड दिए गए हैं। मैं ज्यादा इस में जाना नहीं चाहता हूं। ठीक है, इस बार आपने कुछ अच्छे अवॉर्ड दिए होंगे। इसका मतलब यह नहीं है कि पिछले सात साल में जो अवॉर्ड दिए गए, वे बिल्कुल खराब थे और वे योग्य नहीं थे। कम से कम अवॉर्ड के नाम पर तो राजनीति करना बंद कर दीजिए। इस पर तो पोलिटिक्स न करें। अवॉर्ड देना कोई बड़ी सिद्धि नहीं है, जैसे सरकार ने बहुत बड़ी सिद्धि कर दी और बहुत बड़ा अचीवमेंट कर दिया।

राष्ट्रपति जी ने अपने अभिभाषण में simultaneously election के बारे में बात की है। इस पर मैं कोई टिप्पणी नहीं करना चाहता हूं, लेकिन जब भी आप कोई डिसिज़न

लें, तो मेरे ख्याल से इसमें एक आम सहमति बनानी जरूरी है, consensus बनाना बहुत ही जरूरी है।

उपसभापति जी, यह सरकार गरीबों के लिए नहीं, बल्कि कुछ अमीरों के प्रति समर्पित है। आज किसान बदहाल हैं, एस0सी0/एस0टी0 आज संसाधनों की कमी झेल रहे हैं, अल्पसंख्यक डरे हुए हैं। छोटे व्यापारी, मध्यम वर्ग नुकसान झेल रहा है। आजकल प्रधान मंत्री जी ने अपने भाषण में तीन शब्दों का इस्तेमाल करना बंद कर दिया है। एक तो "मित्रो" कहना बंद कर दिया है, दूसरे "नोटबंदी" कहना बंद कर दिया है और तीसरे नौकरी के बारे में, जॉब के बारे में कहना बंद कर दिया है।

(HMS/3N पर जारी)

HK-HMS/3N/4.55

श्री अहमद पटेल (क्रमागत) : मुझे नहीं मालूम क्यों बंद कर दिया है? किस का साथ और किस का विकास, किसी को पता नहीं है। जागने वाले की बात हुई, लेकिन हमने सुना है कि आजकल भजिए वालों और चाय वालों पर भी ई0डी0 के रेड पड़ रही है। मुझे पता नहीं, उस पर जांच करने की जरूरत है? मंत्री जी ने जनशक्ति की बात की, लेकिन जनशक्ति तभी आती है, जब मन की बात नहीं, जन की बात सुनी जाती है।

महोदय, मैं सिर्फ दो मिनट में अपना वक्तव्य खत्म करूंगा। मान्यवर, हमारा देश प्राचीन देश है। यह भूमि संतों की भूमि है। यहां जगाने वालों की जरूरत नहीं है, यहां काम करने वालों की जरूरत है क्योंकि सिर्फ जगाने वालों से काम नहीं होता। यहां कोई साथी कह रहे थे कि कोई जगाने वाला आ गया, जिस ने देश को जगा दिया। सर,

जगाने वाला आएगा और देश जाग जाएगा, यह बहुत ही भयावह है। It is dangerous. हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि किसी जगाने वाले के बिना हम मंगल ग्रह तक पहुंच गए हैं।

महोदय, अभी परिवर्तन की बात की जा रही थी। राजा राम मोहन राय ने कहा था कि परिवर्तन से बड़ी होती है परिभाषा। उन्नति से दुर्गति को भी परिवर्तन कहते हैं, जो आज हो रही है। उजाले से अंधेरे को भी परिवर्तन कहते हैं, आशा से निराशा को भी परिवर्तन कहते हैं। गांधी जी की नकल करने से पहले गांधी जी के कहे को भी ध्यान में रखना चाहिए। गांधी जी ने कहा था कि दूसरों को बदलने से पहले खुद अपने आपको बदलो। जब तक हम अपने आप को नहीं बदलेंगे, तब तक कुछ नहीं बदलने वाला। मान्यवर, अच्छी बात है कि इस अभिभाषण में गांधी जी और "मनरेगा" की बात की गयी है, लेकिन सरकार में बैठे लोग, अपने नायकों को ही अभिभाषण में भूल गए हैं। अच्छा ही हुआ, लेकिन मैं कहना चाहता हूं कि जो अपने नायकों को ही भूल जाते हैं, उन पर जनता क्या भरोसा करेगी?

उपसभापति जी, अंत में इतना ही कहूंगा कि सरकार कह रही है कि देश बदल रहा है। अब सिर्फ 24 महीने बाकी हैं। मैं कहूंगा कि कुछ भी नहीं बदला है। चिड़ियों ने कहा, चमन बदल गया, गुलों ने कहा गुलशन बदल गया, रविशंकर जी ने कहा, देश बदल गया, लेकिन पीछे से जनता की आवाज आयी, देश वहीं-का-वहीं है। अगर बदला है तो सिर्फ और सिर्फ किसी की चाल बदली है, किसी का चेहरा बदला है और किसी का अंदाज़ बदला है। सरकार में सिर्फ अहम है, अभिमान है और गुरूर है। 2019 में यह

गुरूर भी टूट जाएगा, यह अभिमान भी टूट जाएगा। अगर देश को आगे बढ़ाना है, तरक्की और प्रगति करनी है, तो जो गांधी जी ने कहा था, हमारे संतों ने कहा था, उसे ध्यान में रखना चाहिए। इन्हीं शब्दों के साथ मैं राष्ट्रपति जी के अभिभाषण पर लाए गए धन्यवाद प्रस्ताव के समर्थन की औपचारिकता निभाते हुए अपना वक्तव्य खत्म करता हूं और उपसभापति जी, आपने मुझे बोलने का वक्त दिया, इसके लिए आपको बहुत-बहुत धन्यवाद।

(समाप्त)

श्री विशम्भर प्रसाद निषाद (उत्तर प्रदेश) : माननीय उपसभापति जी, माननीय राष्ट्रपति जी के अभिभाषण पर धन्यवाद प्रस्ताव पर हमने क्रम संख्या 1 से 78 तक संशोधन रखे हैं। महोदय, मुझे समाजवादी पार्टी की ओर से बोलने का मौका दिया गया है, मैं अपने नेता माननीय मुलायम सिंह यादव जी और माननीय मुख्य मंत्री श्री अखिलेश यादव जी को बधाई देता हूं, जिन्होंने जिस तरह से उत्तर प्रदेश का विकास किया है ..(व्यवधान)..

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Prasad*ji*, your party has only three minutes left.

श्री विशम्भर प्रसाद निषाद : सर, उनकी maiden speech थी।

MR. DEPUTY CHAIRMAN: You take five minutes.

श्री विशम्भर प्रसाद निषाद : सर, संजय सेठ जी की maiden speech थी।

MR. DEPUTY CHAIRMAN: I am sorry; this kind of strategy of giving the maiden speech to the last speaker is not good. How can it be? Don't try to

make this kind of a strategy. I will not treat it your maiden speech. ...(Interruptions)... Take only five minutes. ...(Interruptions) ..

(Contd. by KSK/3O)